संतबानी

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत्-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को, जिन का लोप होता जाता है, बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकर शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भरसक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं, और फुटकर शब्दों की हालत में सर्व-साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्राय कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ावला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और सकेत फ़ुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तांत और कौतुक सक्षेप से फ़ुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक माला की अर्थात "सतबानी सग्रह" भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देखकर महा-महोपाध्याय श्री पडित सुधाकर द्विवेदी वैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान् महाराज काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी सग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वा शिक्षा बतलाई गई हैं—उनके नाम और दाम इस पुस्तक के अन्त वाले पृ में देखिए।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाखाना,

रैदास जी का जीवन-चरित्र

रैदास जी जाति के चमार एक भारी भक्त हो गये हैं जिनका नाम हिन्दुस्तान वरन् और देशों में भी प्रसिद्ध है। यह कबीर साहिब के समय में वर्तमान थे और इस हिसाब से इनका जमाना ईसवी सन् की चौदहवीं सदी (शतक) ठहरता है।

यह महात्मा भी कबीर साहिब की तरह काशी में पैदा हुए। कहते हैं कि कबीर साहिब के साथ इनका परमार्थी संवाद कई बार हुआ जिसमें इन्होंने वेद शास्त्र आदि का मडन और कबीर साहिब ने खंडन किया है। जो हो, पर इस ग्रंथ के देखने से तो यही मालूम होता है कि रैदास जी को वेद शास्त्रों में कुछ भी श्रद्धा न थी।

कथा है कि पहले जनम में रैदास जी बाम्हन थे। स्वामी रामानन्द जी से उपदेश लिया था और उनकी सेवा में लगे रहते थे। एक दिन अपने गुरू के भोजन के लियें एक बनिया से सामग्री ले आये जिसका ब्योहार चमारों के साथ भी था। इस हाल के जानने पर रामानन्द जी ने क्रोध से सराप दिया कि तुम चमार का जनम पावोगे। इस पर रैदास जी चोला छोड़ कर एक रघू नाम चमार के घर घुरबिनिया चमाइन से पैदा हुए परन्तु पूरवले जोग के बल से उनको पिछले जनम की सुध न बिसरी और अपनी मा की छाती में मुँह न लगाया जब तक कि भगवन्त की आज्ञा से रामानन्द जी ने चमार के घर आप जाकर रैदास जी को मा का दूध पीने की समझौती नहीं दी। स्वामी रामानन्द जो ने लड़के का नाम रविदास रक्खा, पीछे से लोग उन्हें रैदास रैदास कहने लगे।

जब रैदास जी सयाने हुए तो भक्तों और साधुवों की सेवा में सदा रहने लगे। साधु सेवा में ऐसा मन लग गया कि जो कुछ हाथ आता उन के खिलाने पिलाने और सत्कार में खर्च कर डालते। यह चाल उनके बाप रघू को, जो चमड़े के रोजगार से बड़ा धनी हो गया था, नहीं सुहाई और रैदास जी को अपने घर से निकाल कर पिछवाड़े की जमीन रहने को दे दी जहाँ छप्पर तक नहीं था। एक कौड़ी खर्च को नहीं देता था। रैदास जी वहाँ अकेले अपनी

स्त्री के साथ बड़े आनन्द से रहने लगे, जूता बनाकर अपना गुजर करते और जो समय उस काम से बचता उसे भगवत-भजन में लगाते।

इन का वैराग अनूठा था। भक्तमाल मे लिखा है कि इन की तंगी की दशा देख कर मालिक को दया आई और साधु के रूप में रैदास जी के पास आकर उन को पारस पत्थर दिया और उस से जूता सीने के एक लोहे के औजार को सोना बनाकर दिखा भी दिया। रैदास जी ने उस पत्थर को लेने से इनकार किया, आख़िर को साधु की हट से लाचार होकर कहा कि छप्पर मे खोंस दो (यह छप्पर रैदास जी ने अपने कमाई के पैसे से धीरे धीरे बनवा लिया था) जब तेरह महीने पीछे वही साधु जी फिर आये और पत्थर का हाल पूछा तो रैदास जी ने जवाब दिया कि जहाँ खोंस गये थे वहीं देख लो मैंने नहीं छुआ है।

इसी तरह एक दिन पूजा की पिटारी में पाँच मोहर निकली, रैदास जी उसको देखकर ऐसा डरे मानो साँप हो, यहाँ तक कि पूजा से भी डरने लगे। तब भगवन्त ने आज्ञा की कि जो हमारा प्रसाद है उसका तिरस्कार मत करो। जिस पर रैदास जी को मानना पड़ा और फिर जो कुछ इस रीति से मिलता था उस को ले लिया करते थे और उस से एक धर्मशाला और मंदिर भी बनवाया जिसमे पूजा करने को बाम्हन रक्खे। यह हालत देख कर पंडितों को जलन पैदा हुई और राजा के यहाँ शिकायत की कि यह चमार होकर बाम्हनों का ढचर बनाये हुए है जिसका उसे अधिकार नहीं है इसलिये दंड का भागी है। राजा ने रैदास जी को बुलाकर हाल पूछा और उनके वचन से ऐसा प्रसन्न हुआ कि दंड देने के बदले बड़ा आदर किया।

भक्तमाल में लिखा है कि चित्तौड़ की रानी ने जो काशी में जात्रा के लिये आई थीं रैदास जी की महिमा सुनकर उनको अपना गुरू बनाया। यह गति देख कर पंडितों की आग दूनी भड़की और बड़ी धूम मचाई और रानी को पागल ठहराया। रानी ने एक सभा करके सब पंडितों को और साथ ही रैदास जी को बुलाया जहाँ बहुत बाद-विवाद हुआ—पंडित लोग जात को बड़ा ठहराते थे और रैदास जी वर्णाश्रम की तुच्छता दिखला कर भगवतभक्ति को प्रधान करते थे, अंत को यह बात तै पाई कि भगवान की मूर्ति जो सिंहासन पर बिराजमान थी उसको आवाहन करके बुलाया जाय। जिसके पास वह आ जाय वही बड़ा। बेचारे पंडितों ने तीन पहर तक वेदध्वनि की और मन्त्र पढ़े पर मूरत अपनी जगह से न हिली। जब रैदास जी की पारी आई और उन्होंने

प्रेम और दीनभाव से प्रार्थना की तो मूरत तुरत ही सिंहासन छोड़ कर रैदास जी की गोद में आ बैठी—सब देखकर चकित हो गये।

भक्तमाल में रैदास जी की महिमा के दृष्टांत में यह भी बरनन है कि जब चित्तौड़ की रानी जिसका नाम माली लिखा है अपनी राजधानी को लौटी तो बड़े आदर भाव से रैदास जी को बुलाया और उनके सुशोभित होने के उत्सव में नगर के बाम्हनों को बहुत कुछ दान दिया और अपने यहाँ भोजन कराने के लिये उनको नेवता दिया। बाम्हनों ने लालचबस नेवता तो मान लिया परन्तु चमार की चेली के घर का बना हुआ भोजन करना धर्म के विरुद्ध समझ कर कोरा सीधा लेकर अपने हाथ से भोजन बनाया। जब खाने पर बैठे तो देखते क्या हैं कि हर पंगत में दो दो बाम्हनों के बीच में रैदास जी बैठे हैं—इस अचरजी कौतुक पर सब हक्के-बक्के हो गये और कितनों ने चरनों पर गिर कर रैदास जी से दीक्षा ली। रैदास जी ने अपने कंधे की खलड़ी को उधेड़ कर जनेऊ दिखलाया कि सच्चा भीतर का जनेऊ यह है।

यह कथा सर्व साधारन में मीराबाई के भोज के सम्बन्ध में प्रसिद्ध है और बहुतों का विश्वास है कि यह चित्तौड़ की रानी जिसने रैदास जी से उपदेश लिया और उनका नेवता किया मीरा बाई थी पर इसके निर्णय की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

यह कथा भी प्रसिद्ध है कि एक बड़े रईस रैदास जी की महिमा सुन कर उनके दर्शन और सतसंग को गये। उन के आश्रम पर पहुँच कर देखा कि एक बूढ़ा चमार और उसके साथ बहुत और चमार बैठे जूते बना रहे हैं। थोड़ी देर पीछे सतसंग हुआ और उसके उपरांत एक चमार एक बड़े जूते में भर कर रैदास जी का चरनामृत लाया और सब को बाँटा, जब रईस साहिब की पारी आई तो उन्हों ने उसे ले तो लिया पर घिन मान कर अपने सिर से उछाल कर पीछे गिरा दिया जो कि उन के अँगरखे में सूख गया। जब घर लौटे तो शुद्ध होने के लिये कपड़े उतार कर भंगी को दे दिये और आप पंच गव्य स्नान किया। उसी दिन से उन को गलित कोढ़ होने लगा और भंगी की जिस ने चरनामृत पड़ा हुआ कपड़ा पहिना सोने समान देह निकल आई और चेहरे पर बड़ा तेज आ गया। रईस साहब ने बहुत कुछ दवा की पर जब अच्छे न हुए तो अपने मुसाहिबों की सलाह से फिर रैदास जी के आश्रम पर चरनामृत की आसा में आये; उस दिन चरनामृत नहीं बँटा। तब रईस ने रैदास जी से प्रार्थना की

कि चरनामृत मिले। जवाब पाया कि अब जो चरनामृत आवेगा वह केवल पानी होगा उसमें दया की मौज शामिल न होगी और मौज पर हमारा बस नहीं है। फिर कुछ दिन पीछे बहुत झुरने पछताने पर रैदास जी की दयादृष्टि से रईस अच्छा हो गया।

काशी गवर्मेन्ट संस्कृत पाठशाला के सन् १६०७ के एक परीक्षापत्र में नीचे लिखी हुई कथा संस्कृत में अनुवाद करने को छपी थी जिसे हम यहाँ लिखते हैं—

"इस संसार में वही आदमी ऊँचा कहा जाता है जो कि ऊँचा काम करे, ऊँचे घर में पैदा होने से ऊँचा नहीं कहलाता। देखो आग से धुआँ पैदा होता है, वह हवा के संग से आसमान में भी बहुत दूर तक चढ़ जाता है पर लोगों की आँख में पड़ कर तकलीफ ही देता है, इसीलिये लोग धुएँ को बुरा कहते हैं। आग से कभी कभी बहुत लोग जल कर मर जाते हैं। गाँव के गाँव राख हो जाते हैं तौ भी उस से बहुत फ़ायदा होता है, इस लिये सब लोग उसे पसन्द करते हैं। ऊँची जाति में पैदा होने का जो लोग घमंड करते हैं उन्हें अच्छे लोग नादान समझते हैं। बनारस में एक बाम्हन किसी रघुबंसी क्षत्री की ओर से रोज गंगा जी को फूल पान और सोपारी चढ़ाने जाता था। एक दिन वह बाम्हन जूता खरीदने के लिये रैदास चमार की दूकान पर गया। बात बात में वहाँ पर गंगा पूजा की चर्चा चल पड़ी। रैदास ने कहा कि मैं आप को यों ही जूता देता हूँ, कृपा कर आज मेरी इस सोपारी को भी गंगा जी को चढ़ा देना। बाम्हन ने उस सोपारी को जेब में रख लिया। दूसरे दिन गंगा में नहा धो कर जजमान की सोपारी इत्यादि को चढ़ा कर पीछे से चलती बेरा जेब में से रैदास की सोपारी को निकाल कर दूर से गंगा जी में फेंका। गंगा जी ने पानी में से हाथ ऊँचा कर उस सोपारी को ले लिया। यह तमाशा देख कर वह बाम्हन कहने लगा कि सच है—

"जाति पाँति पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि को होई॥"

रैदास जी पूरी अवस्था को पहुँच कर अर्थात् १२० बरस के होकर ब्रह्म पद को सिधारे और उनके पंथ के अनुयाइयों का विश्वास है कि यह कबीर साहिब की भाँति सदेह गुप्त हो गये बरन अपनी बानी को भी साथ ले गये!!!

गुजरात प्रान्त में इस मत के लाखों आदमी हैं जो अपने को रविदासी कहते हैं।

———

सूचीपत्र

रैदासजी की बानी

॥ साखी ॥

हरि सा हीरा छाड़ि कै, करै आन की आस ।
ते नर जमपुर जाहिँगे, सत भाषै रैदास ॥ १ ॥
अंतरगति राचैँ नहीँ, बाहर कथैँ उदास ।
ते नर जम पुर जाहिँगे, सत भाषै रैदास ॥ २ ॥
रैदास कहै जाके हृदै, रहै रैन दिन राम ।
सो भगता भगवंत सम, क्रोध न ब्यापै काम ॥ ३ ॥
जा देखे घिन ऊपजै, नरक कुंड में बास ।
प्रेम भगति सोँ ऊधरे, प्रगटत जन रैदास ॥ ४ ॥
रैदास तूँ कावँच[1] फली, तुझे न छीपै[2] कोइ ।
तैँ निज नावँ न जानिया, भला कहाँ ते होइ ॥ ५ ॥
रैदास राति न सोइये, दिवस न करिये स्वाद ।
अह-निसि[3] हरिजी सुमिरिये, छाड़ि सकल प्रतिबाद ॥ ६ ॥

॥ पद ॥

राग रामकली

॥ १ ॥

परचै राम रमै जो कोई ।
        या रस परसे दुबिध न होई ॥टेक॥
जे दीसे ते सकल बिनास ।
        अनदीठे नाहीँ बिसवास ॥ १ ॥
बरन कहंत कहै जे राम ।
        सो भगता केवल निःकाम ॥२॥

---

१ किवाँच जिस के बदन में छू जाने से खाज पैदा हो करददोरे पड़ जाते हैं ।
२ छुए । ३ दिन रात ।

फलकारन फूलै बनराई ।
उपजै फल तब पुहुप बिलाई ॥ ३ ॥
ज्ञानहि कारन करम कराई ।
उपजै ज्ञान त करम नसाई ॥ ४ ॥
बट क बीज जैसा आकार ।
पसर्यौ तीन लोक पासार ॥ ५ ॥
जहँ का उपजा तहाँ बिलाइ ।
सहज सुन्नि में रह्यो लुकाइ ॥ ६ ॥
जे मन बिंदै सोई बिंद ।
अमा[1] समय ज्यों दीसै चंद ॥ ७ ॥
जल में जैसे तूँबा तिरै ।
परिचै[2] पिंड जीव नहिं मरै ॥ ८ ॥
सो मन कौन जो मन को खाइ ।
बिन छोरे तिरलोक समाइ ॥ ९ ॥
मन की महिमा सब कोइ कहै ।
पंडित सो जो अनतै रहै ॥ १० ॥
कह रैदास यह परम बैराग ।
राम नाम किन[3] जपहु सभाग ॥ ११ ॥
घृत कारन दधि मथै सयान ।
जीवनमुक्ति सदा निरबान ॥ १२ ॥

॥ २ ॥

अब मैं हार्यौं रे भाई ।
कित भयौं सब हाल चाल ते, लोक न बेद बड़ाई ॥टेक॥

---

१ अमावस । २ परिचय हो जाने से पिंड का भेद जान ले तो जीवनमुक्त होय । ३ क्यों न ।

थकित भयो गायन अरु नाचन, थाकी सेवा पूजा ।
काम क्रोध ते देह थकित भइ, कहौं कहाँ लौं दूजा ॥१॥
राम जनहुँ ना भगत कहाऊँ, चरन पखारुँ न देवा ।
जोइ जोइ करौं उलटि मोहिं बाँधै, ता तें निकट न भेवा ॥२॥
पहिले ज्ञान क किया चाँदना, पाछे दिया बुझाई ।
सुन्न सहज मैं दोऊ त्यागे, राम न कहुँ दुखदाई ॥३॥
दूर बसे षट कर्म सकल अरु, दूरउ कीन्हे सेऊ ।
ज्ञान ध्यान दूर दोउ कीन्हे, दूरिउ छाड़े तेऊ ॥४॥
पाँचो थकित भये हैं जहँ तहँ, जहाँ तहाँ थिति[1] पाई ।
जा कारन मैं दौरो फिरतो, सो अब घट में आई ॥५॥
पाँचो मेरी सखी सहेली, तिन निधि दई दिखाई ।
अब मन फूलि भयो जग महियाँ, आप में उलटि समाई ॥६॥
चलत चलत मेरो निज मन थाक्यो, अब मोसे चलो न जाई ।
साईं सहज मिलो सोइ सनमुख, कह रैदास बड़ाई ॥७॥

॥ ३ ॥

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ ।
गावनहार को निकट बताऊँ ॥टेक॥
जब लग है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावनहारा ॥१॥
जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बढ़ै हँकारा ।
जब मन मिल्यौ राम सागर सों, तब यह मिटी पुकारा ॥२॥
जब लग भगति मुकति की आसा, परम तत्त्व सुनि गावै ।
जहँ जहँ आस धरत है यह मन, तहँ तहँ कछू न पावै ॥३॥
छाड़ै आस निरास परम पद, तब सुख सति कर होई ।
कह रैदास जासों और करत है, परम तत्त्व अब सोई ॥४॥

---

१ स्थिति=ठहराव ।

॥ ४ ॥

राम भगत को जन न कहाऊँ, सेवा करूँ न दासा ।
जोग जग्य गुन कछू न जानूँ, ताते रहूँ उदासा ॥टेक॥
भगत हुआ तो चढ़ै बड़ाई, जोग करूँ जग मानै ।
गुन हूआ तो गुनी जन कहै, गुनी आप को आनै ॥१॥
ना मैं ममता मोह न महिया[1], ये सब जाहिँ बिलाई ।
दोजख भिस्त दोउ सम कर जानौं, दुहुँ ते तरक है भाई ॥२॥
मैं अरु ममता देखि सकल जग, मैं से मूल गँवाई ।
जब मन ममता एक एक मन, तबहि एक है भाई ॥३॥
कृस्न करीम राम हरि राघव, जब लग एक न पेखा ।
वेद कतेब कुरान पुरानन, सहज एक नहिँ देखा ॥४॥
जोइ जोइ पूजिय सोइ सोइ काँची, सहज भाव सत होई ।
कह रैदास मैं ताहि को पूजूँ, जाके ठावँ नावँ नहिँ होई ।

॥ ५ ॥

अब मेरी बूड़ी रे भाई, ताते चढ़ी लोक बड़ाई ॥टेक॥
अति अहंकार उर माँ सत रज तम, ता मैं रह्यौ उरझाई ।
कर्मन बझि पर्यौ कछू नहिँ सूझै, स्वामी नावँ भुलाई ॥१॥
हम मानौ गुनी जोग सुनि जुगता, महा मुरुख रे भाई ।
हम मानो सूर सकल बिधि त्यागी, ममता नहीँ मिटाई ॥२॥
हम मानो अखिल[2] सुन्न मन सोध्यो, सब चेतन सुधि पाई ।
ज्ञान ध्यान सबही हम जान्यो, बूझौं कौन सों जाई ॥३॥
हम जानो प्रेम प्रेम रस जाने, नौबिधि भगति कराई ।
स्वाँग देखि सब ही जन लटक्यो, फिरि यों आन बँधाई ॥४॥

---

१ मथा । २ सपूर्ण ।

यह तो स्वाँग साच ना जानो, लोगन यह भरमाई ।
स्वच्छ रूप सेली जब पहरी, बोली तब सुधि आई ॥५॥
ऐसी भगति हमारी संतो, प्रभुता इहइ बड़ाई ।
आपन अनत और नहिँ मानत, ताते मूल गँवाई ॥६॥
भन रैदास उदास ताहि ते, अब कछु मो पै कर्यो न जाई ।
आपा खोए भगति होत है, तब रहै अंतर उरझाई ॥७॥

॥ ६ ॥

भाई रे भरम भगति सुजान ।
जौ लौँ साँच सौँ नहिँ पहिचान ॥टेक॥
भरम नाचन भरम गायन, भरम जप तप दान ।
भरम सेवा भरम पूजा, भरम सो पहिचान ॥१॥
भरम षट क्रम सकल सहता, भरम गृह बन जानि ।
भरम करि करि करम कीये, भरम की यह बानि ॥२॥
भरम इंद्री निग्रह कीया, भरम गुफा में बास ।
भरम तौ लौँ जानिये, सुन्न की करै आस ॥३॥
भरम सुद्ध सरीर तौ लौँ, भरम नावँ बिनावँ ।
भरम भनि रैदास तौ लौँ, जौ लौँ चाहै ठावँ ॥४॥

॥ ७ ॥

ज्यौँ तुम कारन केसवे, अंतर लव लागी ।
एक अनूपम अनुभवी, किमि होइ बिभागी ॥टेक॥
इक अभिमानी चातृगा[१], बिचरत जग माहीँ ।
यद्यपि जल पूरन मही, कहूँ वा रुचि नाहीँ ॥१॥
जैसे कामी देखि कामिनी, हृदय सूल उपजाई ।
कोटि बैद बिधि ऊचरै, वा की बिथा न जाई ॥२॥
जो तेहि चाहै सो मिलै, आरत गति होई ।
कह रैदास यह गोप नहिँ, जानै सब कोई ॥ ३ ॥

---

१ चातक, पपीहा ।

॥ ८ ॥

आयौं हो आयौं देव तुम सरना ।
जानि कृपा कीजे अपनो जना ॥टेक॥
त्रिबिध जोनि वास जम को अगम त्रास,
तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिरौं ।
ममता अहं विषै मद मातो,
यह सुख कबहुँ न दुतर[१] तिरौं ॥१॥
तुम्हरे नावँ बिसास छाड़ी है आन की आस,
संसार धरम मेरो मन न धीजै[२] ।
रैदास दास की सेवा मानि हो देव विधि देव,
पतित पावन नाम प्रगट कीजै ॥२॥

॥ ९ ॥

भाई रे राम कहाँ मोहिँ बताओ ।
सत राम ता के निकट न आओ ॥टेक॥
राम कहत सब जगत भुलाना, सो यह राम न होई ।
करम अकरम करुनामय केसो, करता नावँ सु कोई ॥१॥
जा रामहीँ सबै जग जानै, भरम भुले रे भाई ।
आप आप तेँ कोइ न जानै, कहै कौन सो जाई ॥२॥
सत तन लोभ परस जीतै मन, गुना प्रश्न नहिँ जाई ।
अलख नाम जाको ठौर न कतहूँ, क्यों न कहो समुझाई ॥३॥
भन रैदास उदास ताहि ते, करता क्यों है भाई ।
केवल करता एक सही सिर, सत्त राम तेहि ठाईं ॥४॥

॥ १० ॥

ऐसो कछु अनुभौ कहत न आवै ।
साहिब मिलै तो को बिलगावै ॥टेक॥

---

१ दुस्तर, कठिन। २ धीर धरै।

सब में हरि है हरि में सब है, हरि अपनो जिन जाना।
साखी नहीं और कोइ दूसर, जाननहार सयाना ॥१॥
बाजीगर सों राचि रहा, बाजी का मरम न जाना।
बाजी झूठ साँच बाजीगर, जाना मन पतियाना ॥२॥
मन थिर होइ तो कोइ न सूझै, जानै जाननहारा।
कह रैदास बिमल बिवेक सुख, सहज सरूप सँभारा ॥३॥

॥ ११ ॥

अखिल खिलै नहिँ का कहि पंडित, कोइ न कहै समुझाई।
अबरन बरन रूप नहिँ जा के, कहँ लौ लाइ समाई ॥टेक॥
चंद सूर नहिँ रात दिवस नहिँ, धरनि अकास न भाई।
करम अकरम नहिँ सुभ असुभ नहिँ, का कहि देहुँ बड़ाई ॥१॥
सीत बायु ऊसन नहिँ सरवत[१], काम कुटिल नहिँ होई।
जोग न भोग क्रिया नहिँ जा के, कहौं नाम सत सोई ॥२॥
निरंजन निराकार निरलेपी, निरबीकार निसासी।
काम कुटिलता ही कहि गावैँ, हरहर[२] आवै हाँसी ॥३॥
गगन[३] धूर[४] धूप[५] नहिँ जा के, पवन पूर नहिँ पानी।
गुन निर्गुन कहियत नहिँ जाके, कहौ तुम बात सयानी ॥४॥
याही सोँ तुम जोग कहत हो, जब लग आस की पासी[६]।
छुटै तबहि जब मिलै एकही, भन रैदास उदासी ॥५॥

॥ १२ ॥

नरहरि[७] चंचल है मति मेरी। कैसे भगति करूँ मैं तेरी ॥टेक॥
तूँ मोहिँ देखै हौँ तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई ॥१॥
तूँ मोहिँ देखै तोहि न देखूँ, यह मति सब बुधि खोई ॥२॥

---

१ पानी के ऐसा हो कर चूना। २ ठठाय के। ३ आकाश। ४ पृथ्वी। ५ तेज, अग्नि। ६ फाँसी। ७ नरसिंह जी अर्थात ईश्वर के एक अवतार का नाम।

सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना ।
गुन सब तोर मोर सब औगुन, कृत उपकार न माना ॥३॥
मैं तैं तोरि मोरि असमझि सों, कैसे करि निस्तारा ।
कह रैदास कृस्न करुनामय, जै जै जगत अधारा ॥४॥

॥ १३ ॥

राम बिन संसय गाँठि न छूटै ।
काम किरोध लोभ मद माया, इन पंचन मिलि लूटै ॥टेक॥
हम बड़ कबि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संयासी ।
ज्ञानी गुनी सूर हम दाता, याहु कहे मति नासी ॥१॥
पढ़े गुने कछु समुझि न परई, जौं लौं भाव न दरसै ।
लोहा हिरन[१] होइ धौं कैसे, जौं पारस नहिं परसै ॥२॥
कह रैदास और असमुझ सी, चालि परे भ्रम भोरे ।
एक अधार नाम नरहरि को, जिवन प्रान धन मोरे ॥३॥

॥ १४ ॥

जब राम नाम कहि गावैगा, तब भेद अभेद समावैगा ॥टेक॥
जे सुख है या रस के परसे, सो सुख का कहि गावैगा ॥१॥
गुरुपरसाद भई अनुभौ मति, बिष अम्रित सम धावैगा ॥२॥
कह रैदास मेटि आपा पर, तब वा ठौरहि पावैगा ॥३॥

॥ १५ ॥

संतो अनिन[२] भगति यह नाहीं ।
जब लग सिरजत मन पाँचो गुन, ब्यापत है या माहीं ॥टेक॥
सोई आन अंतर करि हरि सों, अपमारग को आनै ।
काम क्रोध मद लोभ मोह की, पल पल पूजा ठानै ॥१॥
सत्य सनेह इष्ट अँग लावै, अस्थल अस्थल खेलै ।
जो कछु मिलै आन आखत[३] सों, सुत दारा सिर मेलै ॥२॥

---

१ सोना । २ अनन्य, । ३ अक्षत, कुछ चावल ।

हरिजन हरिहि और ना जानै, तजै आन तन त्यागी ।
कह रैदास सोई जन निर्मल, निसि दिन जो अनुरागी ॥३॥

॥ १६ ॥

भगती ऐसी सुनहु रे भाई। आइ भगति तब गई बड़ाई ॥टेक॥
कहा भयो नाचे अरु गाये, कहा भयो तप कीन्हे ।
कहा भयो जे चरन पखारे, जौं लौं तत्त्व न चीन्हे ॥१॥
कहा भयो जे मूँड़ मुड़ायो, कहा तीर्थ ब्रत कीन्हे ।
स्वामी दास भगत अरु सेवक, परम तत्त्व नहिँ चीन्हे ॥२॥
कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै ।
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक[1] ह्वै चुनि खावै ॥३॥

॥ १७ ॥

अब कछु मरम बिचारा हो हरि ।
आदि अंत औसान राम बिन, कोइ न करै निवारा हो हरि ॥टेक॥
जब मैं पंक पंक[2] अमृत जल, जलहि सुद्ध होइ जैसे ।
ऐसे करम भरम जग बाँध्यो, छूटै तुम बिन कैसे हो हरि ॥१॥
जप तप बिधी निषेध नाम करूँ, पाप पुन्न दोउ माया ।
ऐसे मोहिँ तन मन गति बीमुख जनम जनम डँहकाया[3] हो हरि ॥२॥
ताड़न[4] छेदन[5] त्रायन[6] खेदन[7], बहु बिधि कर ले उपाई ।
लोनखड़ी[8] संजोग बिना जस, कनक कलंक न जाई हो हरी ॥३॥
भन रैदास कठिन कलि के बल, कहा उपाय अब कीजै ।
भव बूड़त भयभीत जगत जन, करि अवलंबन[9] दीजै हो हरी ॥४॥

॥ १८ ॥

नरहरि प्रगटसि ना हो प्रगटसि ना हो ।
दीनानाथ दयाल नरहरे ॥ टेक ॥
जनमेउँ तौही ते बिगरान । अहो कछु बूझै बहुरि सयान ॥१॥

---

१ पिपीलिका—चींटी । २ कीचड़ । ३ ठगाया । ४ मारना । ५ काटना । ६ रक्षा करना । ७ शोक करना, त्याग करना । ८ नौसादर । ९ सहारा ।

परिवारि बिमुख मोहिँ लागि । कछु समुझि परत नहिँ जागि[1] ॥३॥
यह भौ बिदेस कलिकाल । अहो मैँ आइ परयौँ जमजाल ॥४॥
कबहुक तोर भरोस । जो मैँ न कहूँ तो मोर दोस ॥ ४ ॥
अस कहिये तेऊ न जान । अहो प्रभु तुम सरबस मेँ सयान ॥५॥
सुत सेवक सदा असोच । ठाकुर पितहिँ सब सोच ॥ ६ ॥
रैदास बिनवै कर जोरि । अहो स्वामी तुम मोहिँ न खोरि[2] ॥७॥
सु[3] तौ पुरबला अकरम मोर । बलि जाउँ करौ जिन कोर[4] ॥८॥

॥ १९ ॥

त्योँ तुम कारन केसवे, लालच जिव लागा ।
निकट नाथ प्रापत नहीँ, मन मोर अभागा ॥टेक॥
सागर सलिल[5] सरोदिका[6], जल थल अधिकाई ।
स्वाँति बुंद की आस है, पिउ प्यास न जाई ॥ १ ॥
जौँ रे सनेही चाहिये, चित्त बहु दूरी ।
पंगुल फल न पहूँच ही, कछु साध न पूरी ॥ २ ॥
कह रैदास अकथ कथा, उपनिषद[7] सुनीजे ।
जस तूँ तस तूँ तस तुहीँ, कस उपमा दीजे ॥ ३ ॥

॥ २० ॥

गोबिंदे भवजल ब्याधि अपारा ।
ता मेँ सूझै वार न पारा ॥टेक॥
अगम घर दूर उरतर, बोलि भरोस न देहू ।
तेरी भगति अरोहन संत अरोहन[8], मोहिँ चढ़ाइ न लेहू ॥१॥
लोह की नाव पखान बोझी, सुकिरित भाव बिहीना ।
लोभ तरंग मोह भयो काला, मीन भयो मन लीना ॥२॥
दीनानाथ सुनहु मम बिनती, कवने हेत बिलंब करीजै ।
रैदास दास संत चरनन, मोहिँ अब अवलंबन दीजै ॥३॥

---

१ संसार या जगने पर। २ दोष न बिचारो। ३ सो। ४ कसर। ५ पानी
६ तालाब का पानी। ७ वेद का एक अग जिस मेँ ब्रह्म का निरूपन है। ८ सीढ़ी।

॥ २१ ॥

कहाँ सूते मुग्ध नर काल के मँझ मुख ।
तजिय बस्तु राम चितवत अनेक सुख ॥टेक॥
असहज धीरज लोप कृस्न उधरंत कोप,
मदन भुवंग[१] नहिँ मंत्र जंता ।
बिषम पावक ज्वाल ताहि वार न पार,
लोभ की अयनी[२] ज्ञान हंता ॥१॥
बिषम संसार ब्याल[१] ब्याकुल तवै,
मोह गुन बिषै सँग बंधभूता[३] ।
टेरि गुन गारुड़ी[४] मंत्र स्रवना दियो,
जागि रे राम कहि कहि के सूता ॥२॥
सकल सिम्रित[५] जिती सत मति कहै तिती,
हैँ इनही परम गति परम वेता[६] ।
ब्रह्म ऋषि नारद संभु सनकादिक,
राम राम रमत गये पार तेता ॥३॥
जजन जाजन[७] जाप रटन तीरथ दान,
ओषधी रसिक गदमूल[८] देता ।
नागदवनि जरजरी राम सुमिरन बरी,
भनत रैदास चेत निमेता[९] ॥४॥

॥ २२ ॥

रामा हो जग जीवन मोरा ।
तूँ न बिसारि राम मैं जन तोरा ॥टेक॥
सकट सोच पोच दिन राती ।
करम कठिन मोरि जाति कुजाती ॥१॥

---

१ साँप । २ सेना, फौज । ३ बँधा हुआ । ४ साँप के विष उतारने का मंत्र । ५ धर्मशास्त्र । ६ जानने वाला । ७ यज्ञ करना और कराना । ८ रोग की जड़ को पैदा करता है । ९ नियम करने वाला ।

हरहु बिपति भावै करहु सो भाव ।
चरन न छाड़ौं जाव सो जाव ॥२॥
कह रैदास कछु देहु अलंबन ।
बेगि मिलो जीन करो बिलंबन ॥३॥

॥ २३ ॥

तेरा जन काहे को बोलै ।
बोलि बोलि अपनी भगति को खोलै ॥टेक॥
बोलत बोलत बढ़ै बियाधी, बोल अबोलै जाई ।
बोलै बोल अबोल कोप करै, बोल बोल को खाई ॥१॥
बोलै ज्ञान मान परि बोलै, बोलै बेद बड़ाई ।
उर में धरि धरि जब ही बोलै, तब ही मूल गँवाई ॥२॥
बोलि बोलि औरहि समझावै, तब लगि समझ न भाई ।
बोलि बोलि समझी जब बूझी, काल सहित सब खाई ॥३॥
बोलै गुरु अरु बोलै चेला, बोल बोल की परतिति आई ।
कह रैदास मगन भयो जबही, तबहि परमनिधि पाई ॥४॥

॥ २४ ॥

ऐसी भगति न होइ रे भाई ।
राम नाम बिन जो कछु करिये, सो सब भरम कहाई ॥टेक॥
भगति न रस दान भगति न कथै ज्ञान ।
भगति न बन में गुफा खुदाई ॥१॥
भगति न ऐसी हाँसी भगति न आसापासी ।
भगति न यह सब कुल कान गँवाई ॥२॥
भगति न इंद्री बाँधा भगति न जोग साधा ।
भगति न अहार घटाई ये सब करम कहाई ॥३॥
भगति न इंद्री साधे भगति न बैराग बाँधे ।
भगति न ये सब बेद बड़ाई ॥४॥

भगति न मूड़ मुड़ाये भगति न माला दिखाये ।
भगति न चरन धुवाये ये सब गुनी जन कहाई ।।५।।
भगति न तौ लौं जाना आप को आप बखाना ।
जोइ जोइ करै सो सो करम बड़ाई ।।६।।
आपो गयो तब भगति पाई ऐसी भगति भाई ।
राम मिल्यो आपो गुन खोयो रिधि सिधि सबै गँवाई ।।७।।
कह रैदास छूटी आस सब तब हरि ताही के पास ।
आतमा थिर भई तब सबही निधि पाई ।।८।।

॥ २५ ॥

है सब आतम सुख परकास साँचो ।
निरंतर निराहार कलपित ये पाँचो ।।टेक।।
आदि मध्य औसान[1] एक रस, तार बन्यो हो भाई ।
थावर जंगम कीट पतंगा, पूरि रह्यो हरिराई ।।१।।
सर्बेस्वर सर्बांगी सब गति, करता हरता सोई ।
सिव न असिव न साध अस सेवक, उनै भाव नहिँ होई ।।२।।
धरम अधरम मोच्छ नहिँ बंधन, जरा मरन भव नासा ।
दृष्टि अदृष्टि गेय[2] अरु ज्ञाना, एकमेक रैदासा ।।३।।

(राग गौरी)

॥ २६ ॥

कोई सुमार[3] न देखूँ ये सब उपल[4] चोभा ।
जा को जेता प्रकास ता को तेति ही सोभा ।।टेक।।
हम हिये सीखि सीखै हम हिये माड़े ।
थोरे ही इतराइ चलै पतिसाही[5] छाड़े ।।१।।
अतिही आतुर वह काची ही तोरे ।
बूड़े जल पैसे[6] नहीँ पड़ै रे खोरे ।।२।।

---

१ अंत । २ जानने योग्य । ३ गिनती । ४ पत्थर । ५ बादशाही । ६ पैठे ।

थोरे थोरे मुसियत परायो धना ।
कह रैदास सुन संत जना ॥३॥

॥ २७ ॥

मरम कैसे पाइब रे ।
पंडित कौन कहै समुझाई, जा ते मेरो आवा गमन बिलाई ॥टेक॥
बहु बिधि धरम निरूपिये, करते देखे सब कोई ।
जेहि धरमे भ्रम छूटिहै, सो धरम न चीन्हे कोई ॥१॥
करम अकरम बिचारिये, सुनि सुनि बेद पुरान ।
संसा सदा हिरदे बसे, हरि बिन कौन हरै अभिमान ॥२॥
बाहर मूँदि के खोजिये, घट भीतर बिबिध बिकार ।
सुची[1] कौन बिधि होहिँगे, जस कुंजर बिधि ब्यौहार[2] ॥३॥
सतजुग सत त्रेता तप करते, द्वापर पूजा अचार ।
तिहूँ जुगी तीनो दृष्टी, कलि केवल नाम अधार ॥४॥
रबि प्रकास रजन जथा, यों गत दीसै संसार ।
पारस मलि ताँबो छिपा, कनक होत नहिँ बार[3] ॥५॥
धन जोबन हरि ना मिलै, दुख दारुन अधिक अपार ।
एकै एक बियोगियाँ, ता को जानै सब संसार ॥६॥
अनेक जतन करि टारिये, टारे न टरै भ्रम पास[4] ।
प्रेम भगति नहिँ ऊपजे, ता ते जन रैदास उदास ॥७॥

(राग जगली गौडी)

॥ २८ ॥

पहिले पहरे रैन दे बनिजरिया[5], तैं जनम लिया संसार बे ।
सेवा चूकी राम की, तेरी बालक बुद्धि गँवार बे ॥१॥
बालक बुद्धि न चेता तूँ, भूला मायाजाल बे ।
कहा होइ पाछे पछिताये, जल पहिले न बाँधी पाल बे ॥२॥

---

१ पवित्र ।.(२) जैसे हाथी नहा कर फिर अपने ऊपर धूल डाल लेता है। ३ लोहा पारस में लगाने से सोना हो जाता है, ताँबा वार भर भी सोना नहीं होता। ४ फाँसी। ५ वनजारा, व्योपारी ।

बीस बरस का भया अयाना, थाँभि न सका भाव बे ।
जन रैदास कहै बनिजरिया, जनम लिया संसार बे ॥३॥
दूजे पहरे रैन दे बनिजरिया, तूँ निरखत चाल्यौ छाँह बे ।
हरि न दमोदर ध्याइया बनिजरिया, तैं लेय ना सका नाँव बे ॥४॥
नाँव न लीया औगुन कीया, जस जोबन दै तान बे ।
अपनी पराई गिनी न काई[1], मंद करम कमान[2] बे ॥५॥
साहिब लेखा लेसी तूँ भरि देसी, भीर परै तुम्ह ताँह बे ।
जन रैदास कहै बनिजरिया, तूँ निरखत चाला छाँह बे ॥६॥
तीजे पहरे रैन दे बनिजरिया, तेरे ढिलड़े पड़े पिय प्रान बे ।
काया रवनि का करै बनिजरिया, घट भीतर बसे कुजान बे ॥७॥
एक बसै कायागढ़ भीतर, पहला जनम गँवाय बे ।
अबकी बेर न सुकिरित कीया, बहुरि न यह गढ़ पाय बे ॥८॥
कंपी देह कायागढ़ खाना, फिरि लागा पछितान बे ।
जन रैदास कहै बनिजरिया, तेरे ढिलड़े पड़े परान बे ॥९॥
चौथे पहरे रैन दे बनिजरिया, तेरी कंपन लागी देह बे ।
साहिब लेखा माँगिया बनिजरिया, तेरी छाड़ि पुरानी थेह[3] बे ॥१॥
छाड़ि पुरानी जिद्द अजाना, बालदि[4] हाँकि सबेरियाँ बे ।
जम के आये बाँधि चलाये, बारी पूगी[5] तेरियाँ बे ॥११॥
पंथ अकेला बराउ[6] हेला, किस को देह सनेह बे ।
जन रैदास कसै बनिजरिया, तेरी कंपन लागी देह बे ॥१२॥

॥ २९ ॥

देवा हमन पास करंत अनंता,
पतितपावन तेरा बिरद क्यों कहंता ॥टेक॥
तोहिँ मोहिँ मोहिँ तोहिँ अंतर ऐसा ।
कनक कटक[7] जल तरंग जैसा ॥१॥

---

१ कोई । २ कमाया । ३ सहारा । ४ बरधों । ५ पारी पूरी हो गई । ६ बराओ, चुनलो । ७ कड़ा ।

मैं केई नर तुहिँ अंतरजामी ।
ठाकुर थैँ जन जानिये जन थैँ स्वामी ॥२

तुम सबन में सब तुम माहीँ ।
रैदास दास असमझि सी कहौं कहाँ हीँ ॥३

॥ ३० ॥

या रामा एक तूँ दाना, तेरी आदि भेख ना ।
तूँ सुलतान सुलताना, बंदा सकिसता[१] अजाना । ॥टे
मैं बेदियानत न नजर दे, दरमंद[२] बरखुरदार[३] ।
बेअदब बदबखत बौरा, बेअकल बदकार ॥१॥
मैं गुनहगार गरीब गाफिल, कमदिला दिलतार[४] ।
तूँ कादिर[५] दरियावजिहावन[६] , मैं हिरसिया हुसियार ॥२
यह तन हस्त खस्त खराब, खातिर अंदेसाबिसियार[७] ।
रैदास दासहि बोलि[८] साहिब, देहु अब दीदार ॥३॥

॥ ३१ ॥

अब हम खूब वतन घर पाया,
ऊँचा खेर[९] सदा मेरे भाया ॥टेक॥
बोगमपूर सहर का नाम ।
फिकर अँदेस नहीं तेहि ग्राम ॥१॥
नहिँ जहाँ साँसत लानत मार ।
हैफ न खता न तरस जवाल ॥२॥
आव न जान रहम औजूद ।
जहाँ गनी[१०] आप बसै माबूद[११] ॥३॥
जोई सैलि करै सोई भावै ।
महरम महल में को अटकावै ॥४॥

---

१ टूटा हुआ, निर्बल । २ दरमाँदा, आजिज । ३ अयाना । ४ सियाह दिल । ५ समरथ । ६ भवसागर लँघाने या पार कराने वाला । ७ बहुत । ८ बुला कर । ९ गाँव । १० बेपरवाह । ११ जिस की इबादत याने पूजा की जाय ।

कह रैदास खलास[1] चमारा,

जो उस सहर सो मीत हमारा ॥५॥

(राग आसावरी)

॥ ३२ ॥

केसवे बिकट माया तोर, ताते बिकल गति मति मोर ॥टेक॥

सुबिषंग सन कराल अहिमुख, ग्रसति सुटल सुभेष ।

निरखि माखी बकै ब्याकुल, लोभ कालर देख ॥१॥

इंद्रियादिक दुक्ख दारुन, असंख्यादिक पाप ।

तोहि भजन रघुनाथ अंतर, ताहि त्रास न ताप ॥२॥

प्रतिज्ञा प्रतिपाल प्रतिज्ञा चिन्ह, जुग भगति पूरन काम ।

आस तोर भरोस है, रैदास जै जै राम ॥३॥

॥ ३३ ॥

बरजि हो बरजिवी उतूले[2] माया ।

जग खेया महाप्रबल सबही बस करिये,

सुर नर मुनि भरमाया ॥टेक॥

बालक बृद्ध तरुन अरु सुन्दर, नाना भेष बनावै ।

जोगी जती तपी सन्यासी, पंडित रहन न पावै ॥१॥

बाजीगर के बाजी कारन, सब को कौतिग[3] आवै ।

जो देखै सो भूलि रहै, वा का चेला मरम जो पावै ॥२॥

षड ब्रह्मगड लोक सब जीते, येहि बिधि तेज जनावै ।

सब ही का चित चोर लिया है, वा के पीछे लागे धावै ॥३॥

इन बातन से पचि मरियत है, सब को कहै तुम्हारी ।

नेक अटक किन राखो कैसो, मेटो बिपति हमारी ॥४॥

कह रैदास उदास भयो मन, भाजि कहाँ अब जैये ।

इत उत तुम गोबिन्द गोसाईं, तुमहीँ माहिँ समैये ॥५॥

---

१ खालिस । २ अतुल्य । ३ कौतुक ।

॥ ३४ ॥

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ ।
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ ॥टेक॥
थनहर दूध जो बछरू जुठारी ।
पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ॥१॥
मलयागिर बेधियो भुअंगा ।
बिष अम्रित दोउ एकै संगा ॥२॥
मनही पूजा मनही धूप ।
मनही सेऊँ सहज सरूप ॥३॥
पूजा अरचा न जानूँ तेरी ।
कह रैदास कवन गति मेरी ॥४॥

॥ ३५ ॥

तुझ चरनारबिंद भँवर मन ।
पान करत मैं पायो रामधन ॥टेक॥
संपति बिपति पटल माया घन ।
ता मैं मगन होइ कैसे तेरो जन ॥१॥
कहा भयो जे गत तन छन छन,
प्रेम जाइ तौ डरै तेरो निज जन ॥२॥
प्रेमरजा[1] लै राखो हृदै धरि,
कह रैदास छूटिबो कवन परि ॥३॥

॥ ३६ ॥

बंदे जानि साहिब गनी[2] ।
समझि बेद कतेब बोलै काबे[3] मैं क्या मनी ॥टेक॥
स्याही सपेदी तुरँगी नाना रंग बिसाल बे ।
नापैद तैं पैदा किया पैमाल करत न बार बे ॥१॥

१ आज्ञा वा प्रेम का रज अर्थात्-नूर। २ बेपरवाह, धनी। ३ मुसलमानों का तीरथ।

ज्वानी जुमी[१] जमाल सूरत देखिये थिर नाहिँ बे।
दम छ सै सहस इकइस[२] हर दिन खजाने थैँ जाहिँ बे ॥२॥
मनी मारे गर्ब गाफिल बेमेहर बेपीर बे।
दरी खाना[३] पड़ै चोबा[४] होइ नहीँ तकसीर बे ॥३॥
कुछ गाँठि खरची मिहर तोसा, खैर खुबीहा थीर बे।
तजि बदवा[५] बेनजर कमदिल, करि खसम कान बे।
रैदास की अरदास सुनि, कछु हक हलाल पिछान बे ॥४॥

॥ ३७ ॥

सुकछु बिचारयो तातेँ मेरो मन थिर ह्वै गयो।
हरि रँग लाग्यो तब बरन पलटि भयो ॥टेक॥
जिन यह पंथी पंथ चलावा।
अगम गवन मेँ गम दिखलावा ॥१॥
अबरन बरन कहै जनि कोई।
घट घट व्यापि रह्यो हरि सोई ॥
जेइ पद सुन नर प्रेम पियासा।
सो पद रमि रह्यो जन रैदासा ॥२॥

॥ ३८ ॥

माधो संगत सरति[६] तुमारी, जगजीवन किस्न मुरारी ॥टेक॥
तुम मखतूल[७] चतुरभुज, मैं बपुरो जस कीरा।
पीवत डाल फूल फल अम्रित, सहज भई मति हीरा ॥१॥
तुम चंदन हम अरँड बापुरो, निकट तुमारी बासा।
नीच बिरिछ ते ऊँच भये हैँ, तेरी बास सुबासन बासा ॥२॥

---

१ ज़ोश। २ इकीस हज़ार छः सौ श्वास दिन रात मेँ चलते हैँ। ३ दरगाह। ४ छड़ी की मार। ५ ठग। ६ मानी हैं। ७ श्रेष्ठ।

जाति भी ओछी जनम भी ओछा, ओछा करम हमारा ।
हम रैदास रामराई को, कह रैदास विचारा ॥३॥

॥ ३९ ॥

माधो अविद्या हित कीन्ह,
तां ते मैं तोर नाम न लीन्ह ॥टेक॥
मृग मीन भृंग पतंग कुंजर, एक दोस विनास ।
पंच व्याधि असाधि यह तन, कौन ता की आस[1] ॥१॥
जल थल जीव जहाँ तहाँ लौं, करम न या सन जाई ।
मोह पासी[2] अबंध बंध्यो, करिये कौन उपाई ॥२॥
त्रिगुन जोनि अचेत भ्रम भरमे, पाप पुन्न न सोच ।
मानुखा औतार दुरलभ, तहूँ संकट पोच ॥३॥
रैदास उदास मन भौ, जप न तप गुन ज्ञान ।
भगत जन भवहरन कहिये, ऐसे परमनिधान ॥४॥

॥ ४० ॥

देहु कलाली एक पियाला, ऐसा अवधू है मतवाला ॥टेक॥
हे रे कलाली तैं क्या किया, सिरका सा तैं प्याला दिया ॥१॥
कहै कलाली प्याला देऊँ, पीवनहारे का सिर लेऊँ ॥२॥
चंद सूर दोउ सनमुख होई, पीवै प्याला मरै न कोई ॥३॥
सहज सुन्न में भाठी सरवे, पावै रैदास गुरुमुख दरवे ॥४॥

॥ ४१ ॥

भाई रे सहज बंदो लोई, बिन सहज सिद्धि न होई ।
लौलीन मन जो जानिये, तब कीट भृंगी होई ॥टेक॥
आपा पर चीन्हे नहीं रे, और को उपदेस ।
कहाँ ते तुम आयो रे भाई, जाहुगे किस देस ॥१॥

---

१ हिरन, मछली, भौंरा, पतंगा, हाथी, इन का एक एक इन्द्री के बेग से नाश होता है तो तन जो कि पाँचों इन्द्रियों के वशीभूत है उसका क्या ठिकाना ? २ फाँस

कहिये तो कहिये काहि कहिये, कहाँ कौन पतियाइ ।
रैदास दास अजान है करि, रह्यो सहज समाइ ॥२॥

(राग सोरठ)

॥ ४२ ॥

ऐसी मेरी जाति बिख्यात चमारं ।
हृदय राम गोबिंद गुनसारं ॥टेक॥
सुरसरि जल कृत बारुनी रे[1],
जेहि संत जन नहिँ करत पानं ।
सुरा अपवित्र तिनि गंगजल आनिये,
सुरसरि मिलत नहिँ होत आनं[2] ॥१॥
ततकरा[3] अपबित्र कर मानिये,
जैसे कागदगर[4] करत बिचारं ।
भगवत भगवंत जब ऊपरे लेखिये,
तब पूजिये करि नमस्कारं ॥२॥
अनेक अधम जिव नाम गुन ऊधरे,
पतित पावन भये परसि सारं ।
भनत रैदास ररंकार गुन गावते,
संत साधू भये सहज पारं ॥३॥

॥ ४३ ॥

पार गया चाहै सब कोई,
रहि उर वार पार नहिँ होई ॥टेक॥
पार कहै उर वार से पारा ।
बिन पद परचे भ्रमै गँवारा ॥१॥

---

१ गंगाजल से जो शराब बनाई जाय तो भी उसे साधु लोग नहीं पीयेंगे।
२ अगर वही शराब गंगा मे डाल दी जाय तो वह गंगाजल हो जाती है।
३ तत्काल । ४ लेखक ।

पार परम पद मंझ मुरारी ।
ता में आप रमै बनवारी ॥२॥
पूरन ब्रह्म बसै सब ठाईं ।
कह रैदास मिले सुख साईं ॥३॥

॥ ४४ ॥

बापुरो सत रैदास कहै रे ।
ज्ञान बिचार चरन चित लावै, हरि की सरनि रहै रे ॥टेक॥
पाती तोड़े पूजि रचावै, तारन तरन कहै रे ।
मूरति काहिँ बसै परमेसुर, तौ पानी माहिँ तिरै रे ॥१॥
त्रिबिध संसार कौन बिधि तिरबौ, जे दृढ़ नाव न गहे रे ।
नाव छाड़ि दे डूँगे[1] बसे, तौ दूना दुःख सहे रे ॥२॥
गुरु को सबद अरु सुरति कुदाली, खोदत कोई रहै रे ।
राम कहहु कै न बाढ़ै आपो, सोने कूल बहै रे ॥३॥
झूठी माया जग डहकाया, तौ तिन[2] ताप दहै रे ।
कह रैदास राम जपि रसना, काहु के सँग न रहै रे ॥४॥

॥ ४५ ॥

यह अँदेस सोच जिय मेरे । निसिबासर गुन गाऊँ तेरे ॥टेक॥
तुम चिंतत मेरी चिंतहु जाई । तुम चिंतामनि हौ इक नाईं ॥१॥
भगति हेत का का नहिँ कीन्हा । हमरी बेर भये बलहीना ॥२॥
कह रैदास दास अपराधी । जेहि तुम द्रवौ सो भगति न साधी ॥३॥

॥ ४६ ॥

रामराय का कहिये यह ऐसी, जन की जानत हौ जैसी तैसी ॥टेक॥
मीन पकरि काट्यो अरु फाट्यो, बाँटि कियो बहु बानी ।
खंड खंड करि भोजन कीन्हो, तहउँ न बिसर्यो पानी ॥१॥
तैं हमैं बाँधे मोह फाँसी से, हम तोको प्रेम जेवरिया बाँधे ।
अपने छुटन के जतन करत हौं, हम छूटे तोको आराधे ॥२॥

---

१ डोंगी । २ तीन ।

कह रैदास भगति इक बाढ़ी, अब का की डर डरिये ।
जो डर को हम तुम को सेवों, सो दुख अजहूँ मरिये ॥३॥

॥ ४७ ॥

रे मन माछला संसार समुदे, तूँ चित्र बिचित्र बिचारि रे ।
जेहि गाले गलिये ही मरिये, सो सँग दूरि निवारि रे ॥टेक॥
जम छै डिगन[1] डोरि छै कंकन, पर तिया[2] लागो जानि रे ।
होइ रस लुबुध[3] रमै योँ मूरख, मन पँछितावै अजान रे ॥१॥
पाप गुलीचा[4] धरम निबोली[5] देखि देखि फल चीख रे ।
परतिरिया सँग भलो जौँ होवै, तौ राजा रावन देख रे ॥२॥
कह रैदास रतनफल कारन, गोबिँद का गुन गाइ रे ।
काँचे कुंभ भरो जल जैसे, दिन दिन घटतो जाइ रे ॥३॥

॥ ४८ ॥

रे चित चेत अचेत काहे, बालक को देख रे ।
जाति ते कोई पद नहिँ पहुँचा, रामभगति बिसेख रे ॥टेक॥
खटक्रम सहित जे बिप्र होते, हरिभगति चित दृढ़ नाहिँ रे ।
हरि की कथा सुहाय नाहीँ, सुपच तूलै ताहि रे[6] ॥१॥
मित्र शत्रु अजात सब ते, अंतर लावै हेत रे ।
लाग वाकी कहाँ जानै तीन लोक पवेत रे ॥२॥
अजामिल गज गनिका तारी, काटी कुंजर की पास रे ।
ऐसे दुरमत मुक्त कीये, तो क्योँ न तरै रैदास रे ॥३॥

॥ ४९ ॥

रथ को चतुर चलावन हारो ।
खिन हाँकै खिन उभटै[7] राखै, नहीँ आन कौ सारो ॥टेक॥
जब रथ थकै सारथी थाकै, तब को रथहि चलावै ।
नाद बिंद ये सबही थाके, मन मंगल नहिँ गावै ॥१॥

---

१ वसी लगाने वाला, मछली मारने वाला। २ पराई स्त्री। ३ लुभाय कर। ४ एक मीठे फल का नाम। ५ नीम का फल, जो कड़वा होता है। ६ वह डोम के तुल्य है। ७ दूसरी लीक पर।

पाँच तत्त को यह रथ साज्यो, अरधै उरध निवासा ।
चरन कमल लव लाइ रह्यो है, गुन गावै रैदासा ॥२॥

॥ ५० ॥

जो तुम तोरो राम मैं नहिं तोरौं ।
तुम से तोरि कवन से जोरौं ॥टेक॥
तीरथ बरत न करौं अँदेसा ।
तुम्हरे चरन कमल क भरोसा ॥१॥
जहँ जहँ जाओं तुम्हरी पूजा ।
तुम सा देव और नहिं दूजा ॥२॥
मैं अपनो मन हरि से जोर्यों ।
हरि से जोरि सबन से तोर्यों ॥३॥
सबही पहर तुम्हारी आसा ।
मन क्रम बचन कहै रैदासा ॥४॥

॥ ५१ ॥

केहि बिधि अब सुमिरौं रे, अति दुर्लभ दीनदयाल ।
मैं महा बिषई अधिक आतुर, कामना की झाल ॥टेक॥
कहा बाहर डिंभ कीये, हरि कनक कसौटीहार ।
बाहर भीतर साखि तूँ, म कियो ससौ* अँधियार ॥१॥
कहा भयो बहु पाखँड कीये, हरि हृदय सपने न जान ।
जो दारा बिभिचारिनी, मुख पतिब्रत जिय आन ॥२॥
मैं हृदय हारि बैठ्यों हरी, मो पै सर्‌यो न एको काज ।
भाव भगति रैदास दे, प्रतिपाल करि मोहिं आज ॥३॥

॥ ५२ ॥

माधवे नो कहियत भ्रम ऐसा । तुम कहियत होहु न जैसा ॥टेक॥
नरपति एक सेज सुख सूता, सपने भयो भिखारी ।
आछत राज बहुत दुख पायो, सो गति भई हमारी ॥१॥

---

* चद्रमा ।

जब हम हुते तबै तुम नाहीँ, अब तुम हौ हम नाहीँ ।
सरिता[1] गवन कियो लहर महोदधि[2], जल केवल जल माहीं ॥२॥
रजु भुअंग रजनी परगासा[3], अस कछु भरम जनावा ।
समुझि परी मोहिँ कनक अलंकृत[4], अब कछु कहत न आवा ॥३॥
करता एक जाय जग भुगता, सब घट सब बिधि सोई ।
कह रैदास भगति एक उपजी, सहजै होइ सो होई ॥४॥

॥ ५३ ॥

माधो भरम कैसेहु न बिलाई । ताते द्वैत दरसै आई ॥टेक॥
कनक कुंडल सूत पट जुदा, रजु भुअंग भ्रम जैसा ।
जल तरंग पाहन प्रतिमा ज्यौँ, ब्रह्म जीव द्वति ऐसा ॥१॥
बिमल एक रस उपजै न बिनसै, उदय अस्त दोउ नाहीँ ।
बिगता बिगत घटै नहिँ कबहूँ, बसत बसै सब माहीँ ॥२॥
निस्चल निराकार अज अनुपम, निरभय गति गोबिन्दा ।
अगम अगोचर अच्छर अतरक[5], निरगुन अंत अनंदा ॥३॥
सदा अतीत ज्ञान घन बर्जित, निरबिकार अबिनासी ।
कह रैदास सहज सुन्न सत, जिवनमुक्त निधि[6] कासी ॥४॥

॥ ५४ ॥

मन मेरो सत्त सरूप बिचारं ।
आदि अंत अनंत परम पद, संसा सकल निवारं ॥टेक॥
जस हरि कहिये तस हरि नाहीँ, है अस जस कछु तैसा ।
जानत जानत जान रह्यो सब, मरम कहो निज कैसा ॥१॥
करत आन अनुभवत आन, रस मिलै न बेगर[7] होई ।
बाहर भीतर प्रगट गुप्त, घट घट प्रति और न कोई ॥२॥
आदिहु एक अंत पुनि सोई, मध्य उपाइ जु कैसे ।
अहै एक पै भ्रम से दूजो, कनक अलंकृत जैसे ॥३॥

---

१ नदी । २ समुद्र । ३ रात को रस्सी देख कर साँप का धोखा हुआ । ४ गहना । ५ तर्क से रहित । ६ खजाना । ७ बिगाड़ ।

कह रैदास प्रकास परम पद, का जप तप विधि पूजा ।
एक अनेक अनेक एक हरि, कहौं कौन विधि दूजा ॥४॥

॥ ५५ ॥

थोथो जानि पछोरी रे कोई ।
जोइ रे पछोरो जा में निज कन होई ॥टेक॥
थोथी काया थोथी माया ।
थोथा हरि बिन जनम गँवाया ॥ १ ॥
थोथा पंडित थोथी बानी ।
थोथी हरि बिन सबै कहानी ॥ २ ॥
थोथा मंदिर भोग बिलासा ।
थोथी आन देव की आसा ॥ ३ ॥
साचा सुमिरन नाम बिसासा[1] ।
मन बच कर्म कहै रैदासा ॥ ४ ॥

—०—

(राग भैरो)

॥ ५६ ॥

ऐसा ध्यान धरौं बरो बनवारी,
मन पवन दै सुखमन नारी ॥टेक॥
सो जप जपौं जो बहुर न जपना ।
सो तप तपौं जो बहुरि न तपना ॥ १ ॥
सो गुरु करौं जो बहुरि न करना ।
ऐसा मरौं जो बहुरि न मरना ॥ २ ॥
उलटी गंग जमुन में लावौं ।
बिनही जल मंजन ह्वै पावौं ॥ ३ ॥
लोचन भरि भरि बिंब निहारौं ।
जोति बिचारि न और बिचारौं ॥ ४ ॥

---

१ बिस्वास ।

पैंड परे जिव जिस घर जाता ।
सबद अतीत अनाहद राता ॥५॥
ता पर कृपा सोई भल जानै ।
गूँगो साकर[1] कहा बखानै ॥६॥
सुन्न मँडल में मेरा बासा ।
ता ते जिव में रहौं उदासा ॥७॥
कह रैदास निरंजन ध्यावौं ।
जिस घर जावँ सो बहुरि न आवौं ॥८॥

॥ ५७ ॥

अबिगति नाथ निरंजन देवा ।
मैं क्या जानूँ तुम्हरी सेवा ॥टेक॥
बाँधूँ न बंधन छाऊँ न छाया ।
तुमहीं सेऊँ निरंजन राया ॥१॥
चरन पताल सीस असमाना ।
सो ठाकुर कैसे सँपुट[2] समाना ॥२॥
सिव सनकादिक अंत न पाये ।
ब्रह्मा खोजत जनम गँवाये ॥३॥
तोड़ूँ न पाती पूजूँ न देवा ।
सहज समाधि करूँ हरि सेवा ॥४॥
नख प्रसाद जाके सुरसरि[3] धारा ।
रोमावली अठारह भारा[4] ॥५॥
चारो बेद जाके सुमिरत साँसा ।
भगति हेत गावै रैदासा ॥६॥

---

१ शकर, चीनी । २ डब्बा । ३ कथा है कि भगीरथ की तपस्या से विष्णु के
से साठ हज़ार सगर के लड़कों के तारने के लिये गंगा पृथ्वी पर आईं ।
ठारह लोक ।

॥ ५८ ॥

भेष लियो पै भेद न जान्यो ।
अमृत लेइ बिषै सो मान्यो ॥टेक॥
काम क्रोध में जनम गँवायो ।
साधु सँगति मिलि राम न गायो ॥१॥
तिलक दियो पै तपनि न जाई ।
माला पहिरे घनेरी लाई ॥२॥
कह रैदास मरम जो पाऊँ ।
देव निरंजन सत कर ध्याऊँ ॥३॥

—:o:—

(राग बिलावल)

॥ ५९ ॥

का तूँ सोवै जाग दिवाना ।
झूठी जिउन[१] सत्त करि जाना ॥टेक
जिन जनम दिया सो रिजक[२] उमड़ावै
घट घट भीतर रहट चलावै ।
करि बंदगी छाड़ि मैं मेरा,
हृदय करीम सँभारि सवेरा ।

आगे पंथ खरा है झीना,
खाँडे धार जैसा है पैना[1] ।
जिस ऊपर मारग है तेरा,
पंथी पंथ सँवार सवेरा ॥ ४ ॥
क्या तैँ खरचा क्या तैँ खाया,
चल दरहाल[2] दिवान बुलाया ।
साहिब तो पै लेखा लेसी,
भीड़ पड़े तूँ भरि भरि देसी ॥ ५ ॥
जनम सिराना किया पसारा,
सूझि पर्‌यो चहुँ दिसि अँधियारा ।
कह रैदास अज्ञान दिवाना,
अजहूँ न चेतहु नीफँद[3] खाना[4] ॥ ६ ॥

॥ ६० ॥

खालिक सिकस्ता[5] मैँ तेरा ।
दे दीदार उमेदगार, बेकरार जिव मेरा ॥टेक॥
औवल आखिर इलाह, आदम फरिस्ता बंदा ।
जिसकी पनह[6] पीर पैगंबर, मैँ गरीब क्या गंदा ॥१॥
तू हाजरा हजूर जोग इक, अवर नहीँ है दूजा ।
जिसके इसक आसरा नाहीं, क्या निवाज क्या पूजा ॥२॥
नालीदोज़[7] हनोज़[8] बेबख़त[9], कमिँ[10] खिजमतगार तुम्हारा ।
दरमाँदा दर ज्वाब न पावै, कह रैदास बिचारा ॥३॥

॥ ६१ ॥

मैँ बेदनि कासनि[11] आखूँ,
हरि बिन जिव न रहै कस राखूँ ॥टेक॥

---

१ तेज़ । २ तुरत । ३ निर्बंध । ४ घर । ५ टूटा हुआ, निर्बल । ६ पनाह, रक्षा । ७ जूता सीने वाला यानी चमार । ८ अब तक । ९ अभागी । १० कमीना । ११ किस से ।

जिव तरसै इक दंग बसेरा,
करहु सँभाल न सुर मुनि मेरा ।
बिरह तपै तन अधिक जरावै,
नीँद न आवै भोज न भावै ॥१॥
सखी सहेली गरब गहेली,
पिउ की बात न सुनहु सहेली ।
मैँ रे दुहागनि अघ कर जानी,
गया सो जोबन साध न मानी ॥२॥
तू साईं औ साहिब मेरा.
खिजमतगार बंदा मैँ तेरा ।
कह रैदास अँदेसा येही,
बिन दरसन क्यौँ जिवहि सनेही ॥३॥

॥ ६२ ॥

हरि बिन नहिँ कोइ पतित पावन, आनहिँ ध्यावे रे ।
हम अपूज्य पूज्य भये हरि ते, नाम अनूपम गावे रे ॥टेक॥
अष्टादस ब्याकरन बखानैँ, तीन काल षट जीता रे ।
प्रेम भगति अंतर गति नाहीँ ता ते धानुक[1] नीका रे ॥१॥
ता ते भलो स्वान को सत्रू[2], हरि चरनन चित लावै रे ।
मूआ मुक्त बैकुंठ बास, जिवत यहाँ जस पावै रे ॥२॥
हम अपराधी नीच घर जनमे, कुटुँब लोक करै हाँसी रे ।
कह रैदास राम जपु रसना[3], कटै जनम की फाँसी रे ॥३॥

॥ ६३ ॥

गोबिंदे तुम्हारे से समाधि लागी,
उर भुअंग भसम अंग संतत बैरागी[4] ॥टेक॥

---

१ नाम एक नीच जाति का, धुनिया । २ डोम । ३ जीभ । ४ शिव जी को "सदा जोगी" कहा है ।

जाके तीन नैन अमृत बैन, सीस जटाधारी।
कोटि कलप ध्यान अलप, मदन अंतकारी[1] ॥१॥
जाके लील बरन अकल ब्रह्म, गले रुंडमाला।
प्रेम मगन फिरत नगन, संग सखा बाला ॥२॥
अस महेस बिकट भेस, अजहूँ दरस आसा।
कैसे राम मिलौं तोहिं, गावै रैदासा ॥३॥

॥ ६४ ॥

सो कहा जानै पीर पराई।
जाके दिल मे दरद न आई ॥टेक॥
दुखी दुहागिनि होइ पियहीना,
नेह निरति करि सेव न कीना।
स्याम प्रेम का पंथ दुहेला,
चलन अकेला कोइ संग न हेला ॥१॥
सुख की सार सुहागिनि जानै,
तन मन देय अंतर नहिँ आनै।
आन सुनाय और नहिँ भाषै,
रामरसायन रसना चाखै ॥२॥
खालिक तौ दरमंद[2] जगाया,
बहुत उमेद जवाब न पाया।
कह रैदास कवन गति मेरी,
सेवा बंदगी न जानूँ तेरी ॥३॥

—:०:—

(राग टोड़ी)
(६५)

पावन जस माधो तेरा, तुम दारुन अघमोचन मेरा ॥टेक॥
कीरति तेरी पाप बिनासे, लोक बेद यों गावै।
जौं हम पाप करत नहिँ भूधर, तौ तूँ कहा नसावै ॥१॥

जब लग अंक पंक[1] नहिँ परसै, तौ जल कहा पखारै ।
मन मलीन बिषया रस लंपट, तो हरि नाम सँभारै ॥२॥
जो हम बिमल हृदय चित अंतर, दोप कौन पर धरिहौ ।
कह रैदास प्रभु तुम दयाल हौ, अबँध मुक्ति का करिहौ ॥३॥

— ० —

(राग गौड)

॥ ६६ ॥

आज दिवस[2] लेऊँ बलिहारा ।
मेरे घर आया राम का प्यारा ॥टेक॥
आँगन बँगला भवन भयो पावन ।
हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥१॥
करूँ डंडवत चरन पखारूँ ।
तन मन धन उन ऊपरि वारूँ ॥२॥
कथा कहैँ अरु अर्थ विचारैँ ।
आप तरैँ औरन को तारैँ ॥३॥
कह रैदास मिलैँ निज दास,
जनम जनम के काटै पास ॥४॥

॥ ६७ ॥

ऐसे जानि जपो रे जीव,
जपि ल्यो राम न भरमो जीव ॥टेक॥
गनिका थी किस करमा जोग ।
पर-पूरुष सो रमती भोग ॥१॥
निसि बासर दुस्करम कमाई ।
राम कहत बैकुंठे जाई ॥२॥

---

१ कीचड़ । २ दिन ।

नामदेव कहिय जाति के ओछ[1]।
जाको जस गावै लोक ॥ ३ ॥
भगति हेत भगता के चले।
अंकमाल ले बीठल मिले[2] ॥ ४
कोटि जग्य जो कोई करै।
राम नाम सम तउ न निस्तरै ॥
निरगुन का गुन देखो आई।
देही सहित कबीर सिधाई[3] ॥ ६
मोर कुचिल जाति कुचिल में बास।
भगत चरन हरिचरन निवास ॥
चारिउ बेद किया खंडौति।
जन रैदास करै डंडौति ॥ ८ ॥

—: * :—

(राग सारंग)

॥ ६८ ॥

जग में बेद बैद मानीजे।
इनमें और अकथ कछु औरै,
कहो कौन परि कीजे ॥ टेक ॥
भौजल ब्याधि असाधि प्रबल अति,
परम पंथ न गहीजे ॥ १ ॥
पढ़े-गुने कछु समुझि न परई,
अनुभव पद न लहीजे ॥ २ ॥

---

[1] नामदेव भक्त ओछी जाति के अर्थात् छीपी थे। २ बीठल भक्त जाति के माली ... न ध्यान में लगे रहने से राजा के पास हार न पहुँचा सके सो भगवान् ने आप उनका रूप धर कर हार पहुँचा दिया। ३ कथा है कि कबीर साहब देह समेत परलोक को सिधारे [देखो कबीर साहब का जीवन-चरित्र उनकी शब्दावली के भाग १ में जो इसी प्रेस में छपी है।]

चखविहीन कर तारि चलतु हैं,
तिनहिं न अस भुज दीजे ॥ ३ ॥
कह रैदास बिबेक तत्त बिनु,
सब मिलि नरक परीजे ॥ ४ ॥

—.o:—

(राग कानड़ा)

॥ ६९ ॥

माया मोहिला कान्हा, मैं जन सेवक तेरा ॥ टेक ॥
संसार प्रपंच में व्याकुल परमानंदा ।
त्राहि त्राहि अनाथ गोबिंदा ॥ १ ॥
रैदास बिनवै कर जोरी ।
अबिगत नाथ कवन गति मोरी ॥ २ ॥

॥ ७० ॥

चल मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ ॥ टेक ॥
गुरु की साटि ज्ञान का अच्छर ।
बिसरै तौ सहज समाधि लगाऊँ ॥ १ ॥
प्रेम की पाटी सुरति की लेखनि ।
ररौ ममौ लिखि आँक लखाऊँ ॥ २ ॥
येहि बिधि मुक्त भये सनकादिक ।
हृदय बिचार प्रकास दिखाऊँ ॥ ३ ॥
कागद कँवल मति मसि करि निर्मल ।
बिन रसना निसदिन गुन गाऊँ ॥ ४ ॥
कह रैदास राम भजु भाई ।
संत साखि दे बाहुरि न आऊँ ॥ ५ ॥

---

१ आँख के अंधे हाथ की ताली के इशारे पर चलते हैं यही हाल उयों का है ।

कहु मन राम नाम सँभारि ।
माया के भ्रम कहा भूल्यो, जाहुगे कर झारि ॥टेक॥
देखि धौं इहाँ कौन तेरो, सगा सुत नहिं नारि ।
तोरि उतँग सब दूरि करिहैं, देहिंगे तन जारि ॥१॥
प्रान गये कहो कौन तेरा, देखि सोच बिचारि ।
बहुरि येहि कलि काल नाहीं, जीति भावै हारि ॥२॥
यहु माया सब थोथरी रे, भगति दिस प्रतिहारि ।
कह रैदास सत बचन गुरु के, सो जिव ते न बिसारि ॥३॥

॥ ७२ ॥

हरि को टाँडो लादे जाइ रे, मैं बनिजारो राम को ।
रामनाम धन पाइयो, ता ते सहज करूँ व्योहार रे ॥टेक॥
औघट घाट घनो घना रे, निरगुन बैल हमार रे ।
रामनाम धन लादियो, ता ते बिषय लाद्यो संसार रे ॥१॥
अंतेही धन धरयो रे, अंतेहि ढूँढ़न जाइ रे ।
अनत को धरो न पाइये, ता ते चाल्यो मूल गँवाइ रे ॥२॥
रैन गँवाई सोइ करि, दिवस गँवायो खाइ रे ।
हीरा यह तन पाइ करि, कौड़ी बदले जाइ रे ॥३॥
साधुसंगति पूँजी भई रे, बस्तु भई निर्मोल रे ।
सहज बरदवा[1] लादि करि, चहुँ दिसि टाँडो मोल रे ॥४॥
जैसा रंग कुसुंभ का रे, तैसा यह संसार रे ।
रमइया रंग मजीठ का, ता ते भन रैदास बिचार रे ॥५॥

॥ ७३ ॥

प्रीति सुधारन आव ।
तेज सरूपी सकल सिरोमनि, अकल निरंजनराव ॥टेक॥

---

१ बैल ।

पिउ सँग प्रेम कबहुँ नहिँ पायो, करनी कवन बिसारी।
चक[1] को ध्यान दधिसुत[2] सोँ हेत है, योँ तुम ते मैँ न्यारी ॥१॥
भवसागर मोहिँ इक टक जोवत, तलफत रजनी जाई।
पिय बिन सेजड़ क्योँ सुख सोऊँ, बिरह बिथा तन खाई ॥२॥
मेटि दुहाग सुहागिन कीजै, अपने अंग लगाई।
कह रैदास स्वामी क्योँ बिछोहे, एक पलक जुग जाई ॥३॥

—०—

(राग जैतिश्री)

॥ ७४ ॥

सब कछु करत न कहौँ कछु कैसे।
गुन बिधि बहुत रहत ससि जैसे ॥टेक॥
दरपन गगन अनिल[3] अलेप जस।
गंध जलधि प्रतिबिंब देखि तस ॥१॥
सब आरम्भ अकाम अनेहा।
बिधि निषेध कीयौ अनेकेहा ॥२॥
यह पद कहत सुनत जेहि आवै।
कह रैदास सुकृति को पावै ॥३॥

—:०:—

(राग धनाश्री)

॥ ७५ ॥

तेरे देव कमलापति सरन आया।
मुझ जनम सँदेह भ्रम छेदि माया ॥टेक॥
अति संसार अपार भवसागर,
जा मेँ जनम मरना संदेह भारी।
काम भ्रम क्रोध भ्रम लोभ भ्रम मोह भ्रम,
अनत भ्रम छेदि मम करसि यारी ॥१॥

---

१ चकोर के ऐसा ध्यान। २ चंद्रमा। ३ हवा।

पंच संगी मिलि पीड़ियो प्रान यों,
जाय न सक्यो बैराग भागा।
पुत्रबरग कुल बंधु ते भारजा,
भखै दसो दिसा सिर काल लागा ॥ २ ॥
भगति चितऊँ तो मोह दुख ब्यापही,
मोह चितऊँ तो मेरी भगति जाई।
उभय संदेह मोहिँ रैन दिन ब्यापही,
दीनदाता करूँ कवन उपाई ॥ ३ ॥
चपल चेतो नहीं बहुत दुख देखियो,
काम बस मोहिहो करम फंदा।
सक्ति संबंध कियो ज्ञान पद हरि लियो,
हृदय बिस्वरूप तजि भयो अंधा ॥ ४ ॥
परम प्रकास अबिनासी अघमोचना,
निरखि निज रूप बिसराम पाया।
बंदत रैदास बैराग पद चिंतना,
जपौ जगदीस गोबिंद राया ॥ ५ ॥

॥ ७६ ॥

तेरी प्रीति गोपाल सोँ जनि घटै हो।
मैं मोलि महँगे लई तन सटै हो ॥ टेक ॥
हृदय सुमिरन करूँ नैन अवलोकनो,
स्रवनों हरि कथा पूरि राखूँ।
मन मधुकर करौँ चित्त चरना धरौँ,
राम रसायन रसना चाखूँ ॥ १ ॥
साधु संगत बिना भाव नहिँ ऊपजे,
भाव भगति क्योँ होइ तेरी।

बंदत रैदास रघुनाथ सुनु बीनती,
गुरुपरसाद कृपा करो मेरी ॥ २ ॥

॥ ७७ ॥

कवन भगति ते रहै प्यारो पाहुनो रे ।
घर घर देखौं मैं अजब अभावनो रे ॥टेक॥
मैला मैला कपड़ा केता एक धोऊँ ।
आवै आवै नींदहि कहाँ लौं सोऊँ ॥१॥
ज्यों ज्यों जोड़ै त्यों त्यों फाटै ।
झूठै सबनि जरै उठि गयो हाटै ॥२॥
कह रैदास परो जब लेख्यो ।
जोई जोई कियो रे सोई सोई देख्यो ॥३॥

॥ ७८ ॥

मैं का जानूँ देव मैं का जानूँ ।
मन माया के हाथ बिकानूँ ॥टेक॥
चंचल मनुवाँ चहुँ दिसि धावै ।
पाँचो इंद्री थिर न रहावै ॥१॥
तुम तो आहि जगतगुरु स्वामी ।
हम कहियत कलिजुग के कामी ॥२॥
लोक बेद मेरे सुकृत बड़ाई ।
लोक लीक मो पै तजी न जाई ॥३॥
इन मिलि मेरो मन जो बिगार्‍यो ।
दिन दिन हरि सों अंतर पार्‍यो ॥ ४ ।
सनक सनंदन महामुनि ज्ञानी ।
सुक नारद ब्यास यह जो बखानी ॥ ५ ।
गावत निगम उमापति स्वामी ।
सेस सहस मुख कीरति गामी ॥ ६ ॥

जहाँ जाऊँ तहाँ दुख का रासा।
जो न पतियाइ साधु हैं साखी ॥७॥
जम दूतन बहु बिधि करि मार्यो।
तऊ निलज अजहूँ नहिँ हार्यो ॥८॥
हरिपद बिमुख आस नहिँ छूटै।
ताते तृस्ना दिन दिन लूटै ॥६॥
बहु बिधि करम लिये भटकावै।
तुम्हें दोष हरि कौन लगावै ॥१०॥
केवल रामनाम नहिँ लीया।
संतति बिषय स्वाद चित दीया ॥११॥
कह रैदास कहाँ लगि कहिये।
बिन जगनाथ बहुत दुख सहिये ॥१२॥

॥ ७९ ॥

त्राहि त्राहि त्रिभुवनपति पावन।
अतिसय सूल सकल बलि जावन ॥टेक॥
काम क्रोध लंपट मन मोर।
कैसे भजन करूँ मैं तोर ॥१॥
बिषम बिहंगम दुंद नकारी[1]
असरनसरन सरन भौहारी ॥२॥
देव देव दरबार दुआरै।
राम राम रैदास पुकारै ॥३॥

॥ ८० ॥

दरसन दीजै राम दरसन दीजै।
दरसन दीजै बिलँब न कीजै ॥टेक॥
दरसन तोरा जीवन मोरा।
बिन दरसन क्यों जिवै चकोरा ॥१॥

माधो सतगुरु सब जग चेला।
अब के बिछुरे मिलन दुहेला ॥२॥
धन जोबन की झूठी आसा।
सत सत भाषै जन रैदासा ॥३॥

॥ ८१ ॥

जन को तारि तारि बाप रमइया।
कठिन फंद परयो पंच जमइया ॥टेक॥
तुम बिन सकल देव मुनि ढूढूँ।
कहूँ न पाऊँ जमपास छुड़इया ॥१॥
हम से दीन दयाल न तुम से।
चरनसरन रैदास चमइया[1] ॥२॥

—:०:—

॥ अथ आरती ॥

॥ ८२ ॥

आरती कहाँ लौं जोवै।
सेवक दास अचंभो होवै ॥टेक॥
बावन कंचन दीप धरावै।
जड़ बैरागी दृष्टि न आवै ॥१॥
कोटि भानु जाकी सोभा रोमै।
कहा आरती अगनी होमै ॥२॥
पाँच तत्त्व तिरगुनी माया।
जो देखै सो सकल समाया ॥३॥
कह रैदास देखा हम माहीं।
सकल जोति रोम सम नाहीं ॥४॥

॥ ८३ ॥

संत उतारैं आरती देव सिरोमनिये।
उर अंतर तहाँ बैसे बिन रसना भनिये ॥टेक॥

---

१ चमार।

मनसा मंदिर माहिँ धूप धुपइये ।
प्रेमप्रीति की माल राम चढ़इये ॥१॥
चहुँ दिसि दियना बारि जगमग हो रहिये ।
जोति जोति सम जोती हिलमिल हो रहिये ॥२॥
तन मन आतम वारि तहाँ हरि गाइये री ।
भनत जन रैदास तुम सरना आइये री ।

॥ ८४ ॥

नाम तुम्हारो आरतभंजन[1] मुरारे ।
हरि के नाम बिन झूठे सकल पसारे ॥टेक॥
नाम तेरो आसन नाम तेरो उरसा[2] ।
नाम तेरो केसरि लै छिड़का रे ॥१॥
नाम तेरो अमिला नाम तेरो चंदन ।
घसि जपै नाम ले तुझ कूँचा रे ॥२॥
नाम तेरो दीया नाम तेरो बाती ।
नाम तेरो तेलै ले माहिँ पसारे ॥३॥
नाम तेरे की जोति जगाई ।
भयो उँजियार भवन सगरा रे ॥४॥
नाम तेरो धागा नाम फूल माला ।
भाव अठारह सहस जुहारे[3] ॥५॥
तेरो कियो तुझे का अरपूँ ।
नाम तेरो तुझे चँवर ढुला रे ॥६॥
अष्टादस अठसठ चारि खानि हू ।
बरतन हैं सकल संसारे ॥७॥
कह रैदास नाम तेरो आरति ।
अंतरगत हरि भोग लगा रे ॥८॥

---

१ कष्ट हरता । २ हुरसा चंदन घिसने का । ३ प्रनाम ।

॥ ८५ ॥

जो तुम गोपालहि नहिँ गैहौ ।
तो तुम काँ सुख में दुःख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ ॥टेक॥
माला नाय सकल जग डहको भूँठो भेख बनैहौ ।
भूँठे ते साँचे तब होइहौ हरि की सरन जब ऐहौ ॥१॥
कन रस[1] बत रस[2] और सबै रस भूँठहि मूड़ डोलैहौ ।
जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझि जैहौ ॥२॥
जो जन राम नाम रँगराते और रंग न सुहैहौ ।
कह रैदास सुनो रे कृपानिधि प्रान गये पछितैहौ ॥३॥

॥ ८६ ॥

अब कैसे छूटै नाम रट लागी ॥टेक॥
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अँग अँग बास समानी ॥१॥
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवत चंद चकोरा ॥२॥
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती ।
जीकी जोति बरै दिन राती ॥३॥
प्रभुजी तुम मोती हम धागा ।
जैसे सोनहिँ मिलत सुहागा ॥४॥
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥५॥

॥ ८७ ॥

प्रभुजी संगति सरन तिहारी ।
जग जीवन राम मुरारी ॥टेक॥
गली गली को जल बहि आयो,
सुरसरि जाय समायो ।

---

१ कान से सुनने का मजा । २ जबान से बोलने का मजा ।

संगत के परताप महातम,
नाम गंगोदक पायो ॥१॥
स्वाँति बूँद बरसै फनि[1] ऊपर,
सीस बिषै[2] होइ जाई।
ओही बूँद कै मोती निपजे,
संगति की अधिकाई ॥२॥
तुम चंदन हम रेंड़ बापुरे,
निकट तुम्हारे आसा।
संगत के परताप महातम,
आवै बास सुबासा ॥३॥
जाति भी ओछी करम भी ओछा,
ओछा कसब हमारा।
नीचे से प्रभु ऊँच कियो है,
कह रैदास चमारा ॥४॥

संतबानी की कुल पुस्तकों का सूचीपत्र

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

पुस्तक	मूल्य
कबीर साहिब का अनुराग सागर	१।-)
कबीर साहिब का बीजक	१)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	।)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने	॥)
कबीर साहिब की अखरावती	।)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	॥।)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	१॥)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	१॥)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	१॥।)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	२)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	२)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	२)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	१॥=)
सुन्दर विलास	१।=)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	१)
पलटू साहिब भाग २—रेखते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया ...	१)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	१)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग	१-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	१-)
दूलन दास जी की	।≈)

चरनदास जी की बानी, पहला भाग	...
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	१
गरीबदास जी की बानी	१॥।
ैदास जी की बानी	॥≡
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	॥=
रिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	।≡
रिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	॥−
ीखा साहिब की शब्दावली	॥।=)
लाल साहिब की बानी	१≡
बा मलूकदास जी की बानी	।=
साईं तुलसीदास जी की बारहमासी	−)
ारी साहिब की रत्नावली	≡)
ा साहिब का शब्दसार	।=)
शवदास जी की अमींघूँट	=)
नीदास जी की बानी	॥)
राबाई की शब्दावली	॥।=)
हजो बाई का सहज-प्रकाश	॥=)
ा बाई की बानी	।−)
बानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	२)
बानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	२)
	कुल ४३=)॥
हिल्या बाई (अंग्रेजी पद में)	।)

दाम में डाक महसूल व पैकिंग शामिल नहीं है वह अलग से लिया जायगा—हिन्दी की अन्य प्रकाशित पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मुफ़ मँगाइए।

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।